विचार बिन्दु

किताबों में वजन होता है! ये यूँ ही किसी के जीवन की दशा और दिशा नहीं बदल देतीं। –इला प्रसाद

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि : वरदान या अभिशाप

बहुत सारे लोग हर नई चीज़ को संदेह की नज़र देखते हैं। वे आशंकित रहते हैं कि जैसे ही कुछ नया उनके जीवन में आएगा, कुछ न कुछ अनिष्ट करेगा। याद कीजिए, जब मुद्रण चलन में आया तो कुछ को लगा कि इससे ज्ञान ग़लत हाथों में पहुंच जाएगा। जब ध्वनि मुद्रण (रिकॉर्डिंग) की शुरुआत हुई तो हमारे बहुत सारे बड़े गायक–गायिकाओं ने इससे दूरी बरती। जब कंप्यूटर के आने की आहटें सुनाई दी तो इन पंक्तियों के लेखक सहित बहुतों को लगा कि इससे भयंकर बेरोज़गारी का कहर टूट पड़ेगा। समय इस बात का साक्षी है कि बावज़ूद कुछ आशंकाओं के सही साबित होने के, मानवता ने सारे बदलावों को न केवल अपनाया, उनसे अपने जीवन को सुगम और बेहतर भी बनाया। सोचिये, क्या आज आप कंप्यूटर विहीन जीवन की कल्पना भी कर सकते हैं?

आज फिर इतिहास अपने आप को दुहरा रहा है। दुनिया भर में एक नई सुविधा ने हलचल मचा रखी है। इसका नाम है कृत्रिम बुद्धि। वैसे तो इस पर काम काफी पहले शुरू हो गया था लेकिन हाल के वर्षों में इसका बहुत तेज़ी से प्रसार हुआ है। तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान गूगल की एक अधिकारी के अनुसार कृत्रिम बुद्धि विषयक गूगल की सुविधाओं का उपयोग करने में भारतीय सबसे आगे हैं। मज़े की बात यह कि हम ऐसी बहुत सारी सुविधाओं का जिनके बारे में शायद हममें से बहुतों को यह बात पता भी नहीं है कि वे कृत्रिम बुद्धि आधारित हैं, न केवल उपयोग करते हैं, वे हमारे लिए अपरिहार्य भी हो चुकी हैं।

जीवन के तमाम क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। कला–साहित्य–संस्कृति सब इससे लाभान्वित और प्रभावित हो रहे हैं। आप अपनी कल्पना के अनुसार चाहे जैसी तस्वीर रच सकते हैं, गाना बना सकते हैं, लेख लिख सकते हैं। कहना अनावश्यक है कि इस तकनीक और कौशल के बहुत सारे ख़तरे हैं। लेखक को लग सकता है कि अगर यह सब अधिक चलन में आ गया तो उसका क्या होगा? कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर आप एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। बहुत सारे लोग करते भी हैं। तो क्या सारे अनुवादक बेरोज़गार हो जाएंगे? ऐसे बहुत सारे सवाल हर रोज़ उठते रहते हैं।

कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से जो बहुत सारे क्षेत्र उत्तेजित, प्रसन्न और आशंकित हैं उनमें से एक बहुत बड़ा क्षेत्र शिक्षा का है। शिक्षा की दुनिया में इस नई सुविधा को लेकर बहुत सारी उम्मीदें और आशंकाएं दोनों हैं। इस बात पर बहुत सारे विमर्श हो रहे हैं कि क्या निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धि शिक्षकों को विस्थापित कर देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के प्रसार पर होने वाले मानवीय श्रम और व्यय को घटा देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षक के सहायक के रूप में सामने आएगी? क्या यह शिक्षा का पूरा चेहरा ही बदल कर रख देगी? अगर कृत्रिम बुद्धि से थोड़ा पीछे चलकर देखें तो तकनीक ने काफी कुछ बदला है। मोटे–मोटे और कई खण्डों वाले विश्व कोश लगभग अप्रासंगिक हो गए हैं। किसी जानकारी को हासिल करने के लिए आपको पुस्तकालय तक जाने की ज़रूरत लगभग ख़त्म हो गई है। सब कुछ आपकी हथेली में आ गया है। जिन चीज़ों को याद करने में हमें बहुत सारी ऊर्जा लगानी पड़ती थी, अब उन्हें याद रखने की ज़रूरत ही समाप्त हो गई है। ऐसे बहुत सारे बदलाव हुए हैं। ये बदलाव सकारात्मक हैं या नकारात्मक, इस बात से अलग हटकर इस बात को देखें कि ये बदलाव हो चुके हैं। आज कोई पहाड़े याद नहीं करता, क्योंकि यह सारा काम अधिक दक्षता और तीव्रता से कैलक्युलेटर कर देता है। आज मुझे अपने चार आत्मीयों के फ़ोन नम्बर भी याद नहीं हैं, क्योंकि ऐसा करने की कोई ज़रूरत ही नहीं रह गई है। ऐसे अनगिनत बदलाव हमारे चाहे अनचाहे हमारी ज़िंदगी का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

कृत्रिम बुद्धि आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सीखने की गति, समझने की क्षमता और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षा सामग्री को अनुकूलित कर सकती हैं। इससे अलग-अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त स्तर की शिक्षा देना सम्भव होगा, जो वर्तमान व्यवस्था में प्रायः सम्भव नहीं है।

तो यह बात तो सुनिश्चित है कि शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि को आना ही है। बल्कि वह आने लगी है। भविष्य में उसका प्रयोग और ज़्यादा बढ़ने वाला है। जब मैं भारत के संदर्भ में विचार करता हूं तो पाता हूं कि इस बात के दोनों ही पक्ष हैं। कृत्रिम बुद्धि अगर हमारी शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाएगी, तो उसके लिए कुछ चुनौतियां भी खड़ी करेगी। आइये, हम इन दोनों पक्षों पर विचार करते हैं। पहले सकारात्मक पक्ष को लें। मुझे कृत्रिम बुद्धि की सबसे बड़ी सुविधा इस बात में नज़र आ रही है कि वर्चुअल ट्यूटर या चैटबॉट के माध्यम से विद्यार्थी किसी भी समय व कहीं भी अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। इस सुविधा के लिए उन्हें विद्यालय परिसर में होना आवश्यक नहीं होगा। अगर वे अस्वस्थ हैं और घर पर हैं, या और किसी कारण से अवकाश पर हैं तो भी इस सुविधा से अपने अध्ययन को निर्बाध ज़ारी रख सकेंगे। इससे जुड़ा एक और लाभ यह भी है कि इस तकनीक का उपयोग शिक्षा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए भी किया जा सकता है। इससे उन विद्यार्थियों को भी शिक्षा मिल सकती है, जो किसी न किसी वजह से विद्यालय तक जा सकने में समर्थ नहीं हैं। कृत्रिम बुद्धि आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सीखने की गति, समझने की क्षमता और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षा सामग्री को अनुकूलित कर सकती हैं। इससे अलग–अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त स्तर की शिक्षा देना सम्भव होगा, जो वर्तमान व्यवस्था में प्राय: सम्भव नहीं है। मुझे कृत्रिम बुद्धि का अधिक सार्थक उपयोग अध्यापन से अधिक आकलन और मूल्यांकन में नज़र आता है। इसकी मदद से विद्यार्थियों की प्रगति का डेटा विश्लेषण करके उनकी कमजोरियों और ताकतों को जाना जा सकता है, और यह जानने के बाद उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण विधियां तैयार की जा सकती हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था की जो सबसे बड़ी कमज़ोरी है– मूल्यांकन का पक्षपात विहीन होना, उससे यह तकनीक काफी हद तक मुक्ति दिला सकती है। इस तकनीक का प्रयोग उत्तर पुस्तिकाओं के स्वचालित मूल्यांकन में किया जा सकता है, जिससे न केवल शिक्षकों का कार्यभार कम होगा मूल्यांकन प्रक्रिया में मानवीय त्रुटियों और दुष्टताओं की संभावना घटेगी। अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं इसे कृत्रिम बुद्धि का सबसे बड़ा योगदान कहना चाहूंगा। ऐसी और अनेक सुविधाएं हैं जो कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से हमारी शिक्षा व्यवस्था को प्राप्त होने की सम्भावनाएं हैं। जैसे–जैसे कृत्रिम बुद्धि के अनुप्रयोग विकसित होंगे, इन सुविधाओं का भी विकास और विस्तार होगा।

अब थोड़ी बात चुनौतियों की भी कर ली जाए। सबसे पहली बात तो यह है कि हमारे पास साधनों की बहुत कमी है। कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग के लिए डिजिटल उपकरण की आवश्यकता होती है और उसके परिचालन के लिए इण्टरनेट की निर्बाध ज़रूरत होती है। क्या हम इसके लिए पूरी तरह सक्षम हैं? केवल इतना ही नहीं, हमारे यहां तो बात–बात पर कानून और व्यवस्था के नाम पर इंटरनेट सुविधाओं को स्थगित करने का चलन है। ये सारी बातें इस सुविधा का कितना लाभ लेने देंगी? फिर यह भी विचारणीय है कि क्या हमारा शिक्षक समुदाय, विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों का शिक्षक समुदाय इस सुविधा का लाभ विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए समुचित रूप से प्रशिक्षित हो पाएगा? और अगर हो भी गया तो क्या वह इस नवाचार के प्रयोग में रुचि लेगा? तीसरी बड़ी चुनौती हमारी भाषिक विविधता को लेकर है। यह सही है कि तकनीक पर अब केवल अंग्रेज़ी का वर्चस्व नहीं रह गया है और अनेक भारतीय भाषाओं का समर्थन उसे प्राप्त है, फिर भी देश की ज़्यादातर भाषाओं का समर्थन तकनीक को मिलने में अभी काफी समय लगेगा। यह समर्थन मुख्यत: निजी क्षेत्र ही उपलब्ध करा रहा है और जहां उसे अपना लाभ नज़र नहीं आएगा, वहां वह ऐसा क्यों करेगा? शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर जो सबसे बड़ी आशंका मेरे मन में है वह यह है कि इससे मानवीय स्पर्श घटता जाएगा, और यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना होगी। मैं मानवीय स्पर्श रहित शिक्षा को बहुत बड़े ख़तरे के रूप में देखता हूं। मुझे आशंका है कि इस तरह की शिक्षा से हम जो पीढ़ी तैयार करेंगे वह हमारी बहुत सारी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरी नहीं उतरेगी।

यहां मैंने शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग को लेकर दोनों पक्षों को सामने रखने का प्रयास किया है। एक ख़ास बात यह है कि ऐसा करने में मैंने ख़ुद भी कृत्रिम बुद्धि का थोड़ा सहयोग लिया है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि दोनों ही पक्षों की जो बातें मैंने की हैं, वे अनंतिम हैं। परिदृश्य बहुत तेज़ी से बदल रहा है। हर रोज़ नई सुविधाएं सामने आ रही हैं। इसलिए यह बात भविष्य ही बताएगा कि कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के लिए वरदान साबित होती है या अभिशाप!

(बेंगलुरु प्रवास से)

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मान्यता का चक्रव्यूह

राजेन्द्र भाणावत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने देश के प्रबुद्ध नागरिकों, विशेषकर वरिष्ठजनों से यह अपील की थी कि वे सरकार के सामाजिक कार्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में अपना सहयोग प्रदान करें। इसी आव्हान से उत्साहित होकर अंग्रेजी की एक सेवानिवृत प्रोफेसर ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर, अपनी स्वैच्छिक संस्था के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की बालिकाओं के साथ काम करने का निर्णय लिया। पहले तो उन्होंने सरकार द्वारा संचालित समाज कल्याण विभाग के आवास गृहों में रह रही बालिकाओं को काउंसलिंग और कौशल प्रदान करने का काम किया। इसके बाद, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र की राजकीय विद्यालय में पढ़ने वाली सातवीं से दसवीं तक की बालिकाओं को विद्यालय समय के बाद, विज्ञान, कंप्यूटर, अंग्रेजी और गणित में शिक्षण देना का काम किया। इसके परिणाम स्वरूप जो लड़कियां 40–50 प्रतिशत अंक प्राप्त करती थीं, वे 80– 90 प्रतिशत अंक बोर्ड की परीक्षाओं में ला सकीं। इसी प्रकार का काम इस संस्था ने जयपुर की अत्यंत निर्धन परिवारों की लड़कियों के साथ भी किया। यहां भी बड़े उत्साहवर्धक परिणाम आए। संस्था द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के साथ ही बालिकाओं में विभिन्न प्रकार के जीवन कौशल भी विकसित किए गए। इसी कारण ये बालिकाएं अब पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे का अध्ययन कर रही हैं।

गत वर्ष इस संस्था ने छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से एक शिक्षण केंद्र प्रारंभ किया। इसमें घरों में काम करने वाली बाइयों, दिहाड़ी मजदूरी करने वाले परिवारों के चार से दस वर्ष के बालक बालिकाओं को पढ़ाई–लिखाई के साथ सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान करने का कार्य प्रारंभ किया। इन्होंने इस कार्य के लिए कुछ समर्पित शिक्षिकाओं को भी अपने साथ जोड़ा, जिन्हें सरकारी शिक्षकों की तुलना में बहुत कम मानदेय दिया जाता है। इस संस्था का संचालन केवल अपने परिचितों और मित्रों से प्राप्त सहायता राशि से ही किया जा रहा है। इस केंद्र की लोकप्रियता के कारण कई बच्चों ने सरकारी विद्यालय, जहां मिड डे मील भी मिलता है, छोड़कर इस शिक्षण केंद्र में प्रवेश लिया। वर्तमान में यहां लगभग 90 प्रतिशत बच्चे नामांकित हैं । इन्हें समय–समय पर सहयोगकर्ताओं द्वारा अच्छा रुचिकर नाश्ता अवश्य दिया जाता है।

कुछ अभिभावकों के आग्रह पर, संस्था के पदाधिकारियों ने इस केंद्र को प्राथमिक विद्यालय में परिवर्तित करने की सोची। इस संस्था द्वारा प्राथमिक विद्यालय के रूप में मान्यता का प्रयास डेढ़ वर्ष से किया जा रहा है और अब तक सफल नहीं हो पाई है। इसी की व्यथा और कथा का उल्लेख इस लेख में करने का प्रयास किया गया है, ताकि सरकार में बैठे लोग यह समझ सकें कि क्यों मन से समाज सेवा करने वाले लोग, आसानी से समाज सेवा के कार्य में सरकार के साथ नहीं जुड़ पाते?

मान्यता के लिए जब जयपुर स्थिति शिक्षा संकुल में पता किया, तो बताया गया कि आजकल सारा काम ऑनलाइन होता है और मान्यता के लिए प्रार्थना पत्र पोर्टल पर ही देना होता है, जो निश्चित अवधि में ही उपलब्ध होता है। चूंकि, यह अवधि गत वर्ष समाप्त हो चुकी थी, वर्ष 2023– 24 में ऐसा करना संभव नहीं हो पाया। इस कार्यवाई को फिर इस सत्र में करने की कोशिश की गई। कई प्रकार की विस्तृत जानकारियां पोर्टल पर डालनी थी और कई दस्तावेज भी अपलोड करने थे जैसे किराया अनुबंध, भवन का पी डब्लू डी से अनुमोदित मानचित्र, कमरों की संख्या, शिक्षकों की संख्या एवं संस्था का विस्तृत विवरण आदि–आदि। ये सब सूचनाएं पोर्टल पर डाल दी गईं, इस अपेक्षा में कि शीघ्र मान्यता मिल जाएगी। यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया। सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद भी कोई प्रगति नहीं हो पा रही थी।अचानक एक दिन शिक्षा संकुल से एक लिपिक का फोन संस्था के सचिव के पास आया कि आपके द्वारा अपलोड किए गए कोई भी दस्तावेज उपलब्ध नहीं हो रहे हैं, अत: आप किसी के साथ उनकी हार्ड कॉपी भिजवा दें। संस्था के सचिव ने सारे पत्रों और दस्तावेजों की एक प्रति लगाते हुए पूरी पत्रावली शिक्षा संकुल में संबंधित कार्यालय के पास भिजवा दी। इसके बावजूद कुछ समय बाद उसी लिपिक का फिर फोन गया कि उनके द्वारा दी गई पत्रावली में कई सारे दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं।

उल्लेखनीय है कि संस्था की सचिव और अध्यक्ष मेरे निकट के परिचित हैं, अत: मैने उनकी सहायता करने की दृष्टि से शिक्षा संकुल के संबंधित लिपिक से बात की और इस कार्य में सहायता करने का आग्रह किया। उन्होंने तत्काल यह स्वीकार कर लिया कि उनके पास सारे दस्तावेज उपलब्ध हो गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पूरी पत्रावली को निदेशालय, बीकानेर में भेजा जाएगा और वहां से मान्यता का पत्र प्राप्त होगा। अभी तक मुझे यह समझ में नहीं आया कि जब सारी कार्रवाई पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन होनी चाहिए थी तो सारी सूचनाओं की हार्ड कॉपी क्यों मांगी जा रही थी? खैर, क्योंकि संस्था के हित में काम करना था, अत: जैसा मांगा गया, वह उन्हें दे दिया गया था। शिक्षा विभाग के अधिकारी इस शिक्षण केंद्र को देखकर गए थे।

चूंकि मैं व्यक्तिगत रूप से इस शिक्षण केंद्र को देखता रहा हूं, मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि सभी शिक्षक मनोयोग से वंचित वर्ग के बालक बालिकाओं को न केवल भाषा एवं गणितीय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, अपितु उनके सर्वांगीण विकास हेतु जीवन कौशल की आवश्यक क्षमताएं भी उनमें विकसित कर रहे हैं।

बीकानेर निदेशालय में पत्रावली पहुंचने के बाद भी जब कई दिनों तक कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई तो मैंने अपने स्तर पर इस बारे में जानकारी करने का प्रयास किया। विभिन्न स्तरों पर बात करने के साथ ही निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा से भी आग्रह किया, क्योंकि एक पुनीत कार्य में सहयोगी बनने की इच्छा मेरे मन में थी। उनसे बात करने का भी कोई असर नहीं हुआ और किसी भी प्रकार के कोई अनुमोदन की सूचना वहां से प्राप्त नहीं हुई। कुछ समय बाद, पोर्टल पर यह दिखने लगा कि उनके प्रस्ताव में अनेक प्रकार की आपत्तियां हैं, पाठकों के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि संस्था के इस केंद्र पर 5 शिक्षिकाएं कार्यरत हैं जबकि अधिकांश राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में एक या दो शिक्षक हैं।

कैसी विडंबना है कि जो शिक्षा अधिकारी एक समर्पित स्वैच्छिक संस्था के प्रस्ताव में हर तरह की अड़चन डालने का प्रयास कर रहे हैं, उन्होंने सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों को शायद कभी देखा ही नहीं है! अधिकांश विद्यालय एक या दो कमरे में चलते हैं एवं बहुत ही गंदगी के वातावरण में संचालित हैं, किंतु जब उन्हें किसी संस्था द्वारा संचालित शिक्षण केंद्र को प्राथमिक विद्यालय के रूप मान्यता प्रदान करने का अवसर मिला तो अपनी सारी विद्वता इसी में लगा दी कि, कैसे इस काम को रोका जाए? बाद में, किसी ने यह भी बताया कि यदि आपके स्कूल का निरीक्षण करने के लिए जो शिक्षा अधिकारी आए थे, उनकी ठीक तरह 'आवभगत' कर ली गई होती, तो आपको शीघ्र मान्यता मिल चुकी होती।

इस कथन में कितनी सच्चाई है, यह कहना तो कठिन है। इस संस्था के पदाधिकारी, प्रारंभ से नैतिक मूल्यों के वाहक रहे हैं और इसी के आधार पर पूरी समर्पण भावना से काम कर रहे हैं, इसीलिए उन्हें यह अनैतिक तरीका कतई मंजूर नहीं था। शायद इसी कारण, उन्हें अब तक मान्यता नहीं मिली है और आगे भी मिलने की संभावना कम ही है। यह पूरा विवरण, विस्तृत रूप से देने का एक ही कारण है कि सरकार, स्वैच्छिक कार्य करने वालों को यदि प्रोत्साहित न भी करे, तो कम से कम उन्हें हतोत्साहित और प्रताड़ित तो न करे। मैंने तो प्रारंभिक निदेशक को यह आग्रह किया था कि वह जब जयपुर आएं तो इस शिक्षण केंद्र को स्वयं देख लें। उन्हें यह स्पष्ट हो जाएगा कि इसमें पढ़ने वाले बच्चों का शैक्षिक स्तर, अधिकांश सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की तुलना में कहीं बेहतर है। खैर, वे नहीं आए। शायद उनकी रुचि भी नहीं थी, इसलिए उनका आना न हो पाया।

अब मैं इसे सरकार और समाज के प्रबुद्ध वर्ग पर छोड़ता हूं कि इस प्रकार के घटनाक्रम से समाज में क्या संदेश जाता है? इस आलेख का उद्देश्य, किसी व्यक्ति विशेष पर लांछन लगाना नहीं है, किंतु कुल मिलाकर जो सरकारी प्रक्रिया और मानसिकता है उस पर तो प्रश्न चिन्ह स्वत: लगता ही है। इस प्रकार की मानसिकता के चलते, प्रधानमंत्री के द्वारा किए गए आव्हान के बावजूद, कितने लोग समाज सेवा के पुनीत कार्य से जुड़ पाएंगे, कहना कठिन है। इसे हम देश का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली अनेक संस्थाएं, इच्छा के बावजूद देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने में संकोच करने लगी हैं। इन लोगों को कुछ नहीं चाहिए, बस केवल सरकार का प्रोत्साहन और उसके अधिकारियों का अच्छा व्यवहार चाहिए। काश ऐसा हो पाता ......

तो, यह थी मान्यता की व्यथा और कथा। यदि पाठकों में से कोई इस बारे में अपनी राय व्यक्त करना चाहें तो वे इस समाचार पत्र के संपादक के माध्यम से मुझ तक पहुंचा सकते हैं। हम सबको मिलकर इस स्थिति में सुधार करना ही होगा। तब ही हम, इन निर्धन, वंचित वर्ग के बच्चों के प्रति अपना दायित्व सही रूप में निर्वहन कर पाएंगे और विकसित भारत बनाने में अपनी भूमिका निभा पाएंगे।

–राजेन्द्र भाणावत,
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पी.ओ.पी. फैक्टरियों के धुएं से खारा गांव के ग्रामीण परेशान

- **प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने जब यहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स नापा तो 900 आया, जो पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा है**
- **गांव में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है इसका मुख्य कारण गांव से सटी 40 से अधिक पीओपी फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है**

बीकानेर, (निसं)। सुमित्रा श्वास की बीमारी से पीड़ित होने के कारण तीन महीने से स्कूल नहीं जा पा रही है। सुरेश पारीक की पत्नी संतोष और उनके तीन भतीजे भी दमा से परेशान हैं। ऐसे हालात खारा औद्योगिक क्षेत्र से सटे खारा गांव में हर घर के हैं। प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने जब वहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स नापा तो 900 आया, जो पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा है। गांव में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है। इसका मुख्य कारण गांव से सटी 40 से अधिक पीओपी फैक्टरियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है।

गजे सिंह सिसोदिया, महावीर सिंह, ओमाराम प्रजापत, पूरण सिंह, दूलाराम, चंद्र सिंह, मांगीलाल ने बताया कि गांव में चौबीस घंटे घुटन महसूस होती है। खुली हवा में सांस लेना दूभर हो गया है। शाम से लेकर सुबह 10 बजे तक आसमान में धुएं की गर्द छायी रहती है। फैक्ट्री से 10 मीटर दूर रहने वाले रामूराम के 70 वर्षीय पिता छोगाराम और पांचों बच्चे भी बीमार हैं। छैलू सिंह ने बताया कि उसकी बेटी सुमित्रा के दमे का इलाज चल रहा है। तीन महीने से स्कूल नहीं जा पा रही। उसे घर में ही रखना पड़ता है। बेटे को हर वक्त इनहेलर पर निर्भर रहना पड़ता है।

सरपंच भैरूसिंह राठौड़ ने बताया कि 1500 घरों के इस गांव की आबादी करीब 12 हजार है। हर घर में दो–तीन सदस्य श्वास की बीमारी से पीड़ित हैं। कुछ के शरीर पर लाल चकत्ते भी निकलने लगे हैं। प्रशासन को कई बार हालात बता चुके हैं, लेकिन प्रदूषण फैलाने वाली फैक्टरियों को बंद कराना तो दूर कोई संभालने तक नहीं आता। सरकारी स्कूल के चार सौ से अधिक बच्चे और स्टाफ भी बुरी तरह परेशान हैं।

खारा गांव में वायु प्रदूषण की जांच के लिए प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने तीन अलग–अलग लोकेशन पर लोगों के घरों पर मशीन लगाई है। इससे 10 दिन तक वायु प्रदूषण चेक किया जाएगा। पिछले एक सप्ताह का एयर क्वालिटी इंडेक्स औसत 900 रिकॉर्ड किया गया है। यह मानक चौंकाने वाला है। मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी राजकुमार मीणा का कहना है कि यह मानक प्रदेश में सबसे ज्यादा और अविश्वसनीय है। गांव से सटी 40 पीओपी फैक्ट्रियों के कारण ये हालत है। यहां से दो–तीन किमी की दूरी पर एक्यूआई 200 से 300 से बीच है। गांव के हालात को देखते हुए सर्वे किया जा रहा है।

रीको औद्योगिक क्षेत्र में करीब 500 उद्योग हैं, जिनमें से 125 पीओपी की फैक्ट्रियां हैं। सालों पहले खारा गांव की सीमा में मिनरल जोन बनाया गया था। 125 में से 40 फैक्ट्रियों को उस जोन में भूखंड दिए गए थे। उस समय गांव की आबादी कम थी। अब आबादी मिनरल जोन के करीब आ गई है। दोनों के बीच केवल एक सड़क का ही फासला है। जब हवा गांव की तरफ होती है तो सांस लेना भी दूभर हो जाता है। प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी का कहना है कि सभी फैक्ट्रियां एक साथ चलती हैं। गांव में वायु प्रदूषण का मानक 900 एक्यूआई आना इसका सबसे बड़ा कारण है।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अनुसार खारा गांव से सटे मिनरल जोन को अन्यत्र शिफ्ट करना ही इस समस्या का समाधान है। दरअसल यह समस्या पिछले तीन सालों में ही पैदा हुई है। पिछले साल मई में संभागीय आयुक्त ने इस मुद्दे पर बैठक भी बुलाई थी। उस बैठक में 40 फैक्ट्रियों को अन्यत्र शिफ्ट करने पर चर्चा हुई थी, लेकिन उस पर अमल नहीं हो पाया और मामले को दबा दिया गया।

पीबीएम के श्वसन रोग विभाग के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद ठकराल का कहना है कि दमा, सीओपीडी का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है। पीओपी की फैक्टरियों से निकलने वाला धुआं श्वास संबंधी बीमारियों का कारण बन रहा है। वहीं, पीबीएम हॉस्पिटल के वरिष्ठ स्किन रोग विशेषज्ञ डॉ. आरडी मेहता का कहना है कि धुएं के कारण त्वचा संबंधी बीमारियां नहीं होती। इसका कारण कुछ और हो सकता है।

परविंद्र सिंह राठौड़, अध्यक्ष, खारा उद्योग संघ ने बताया कि मिनरल जोन रीको ने काटा था। उस वक्त उन्हें गांव की सीमा का ध्यान रखना चाहिए था। अब पॉल्यूशन विभाग की गाइड लाइन के तहत पीओपी वाले काम कर रहे हैं। सबसे बड़ी सफाई की समस्या है। गाड़ियों का पॉल्यूशन काफी ज्यादा है। रीको को सड़कों की सफाई करानी चाहिए।

राजकुमार मीणा, क्षेत्रीय अधिकारी, राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल बीकानेर का कहना है कि खारा गांव के पास पीओपी की 40 फैक्टरियों से निकलने वाले धुएं से सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण फैल रहा है। उन्हें बंद कर दूसरी जगह शिफ्ट करना ही समस्या का समाधान है। हमारा सर्वे चल रहा है। अगले सप्ताह तक इसकी रिपोर्ट प्रशासन, रीको और सरकार को भेज दी जाएगी।

जैसलमेर में सैलानियों से ठगी करने वाले 73 रिसॉर्ट्स पर केस दर्ज

जैसलमेर, (नि.सं.)। जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सम सैंड ड्यून्स में रिसॉर्ट्स की ऑनलाइन बुकिंग करके पर्यटकों के साथ ठगी की जा रही है। ट्रैवल वेबसाइट्स पर ऐसे फेक टेंट रिसोर्ट्स दिखाए जा रहे हैं जो वास्तविकता में धरातल पर हैं ही नहीं। पुलिस ने ऐसे 73 फर्जी रिसॉर्ट्स के खिलाफ मामला दर्ज कर किया है। इसके साथ ही पुलिस ने बुकिंग डॉट कॉम, अगोडा, मेक माय ट्रिप, ट्रिप एडवाइजर, यात्रा डॉट कॉम सहित विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर रिसॉर्ट्स को लिस्टेड करने वाली कंपनियों को भी ऐसे फर्जी रिसॉर्ट्स को वेबसाइट से हटाने को लिखा है।

गौरतलब है कि सम में वास्तविकता में तो 150 के करीब रिसोर्ट हैं। लेकिन अलग–अलग ऑनलाइन वेबसाइट पर 400 से ज्यादा दिखा रहे हैं। यहां गूगल भी धोखा दे देता है। खाली जमीन पर भी रिसोर्ट बता रहा है। जबकि वास्तविकता में वहां कुछ भी नहीं है। ऐसे में यहां आने वाले सैलानी ऑनलाइन रिसोर्ट बुक कर धोखाधड़ी का शिकार हो रहे हैं। फेक रिसोर्ट्स चलाने वाले इतने शातिर है कि उन्होंने गूगल मैप पर रिसोर्ट की लोकेशन भी सेट करवा रखी है। गूगल की तरफ से बाईपोस्ट लेटर भी आता है, लेकिन ये लोग पोस्ट वितरण करने वाले से यह पत्र हासिल कर अपनी लोकेशन सेट करवा देते हैं। दूसरे रिसोर्ट के स्थान पर अपने रिसोर्ट की लोकेशन तो कहीं किसी खाली पड़ी जमीन पर रिसोर्ट की लोकेशन सेट करवा दी जाती है। जैसलमेर एसपी सुधीर चौधरी ने बताया कि ट्रैवल वेबसाइट पर भी लिस्टेड फेक रिसोर्ट चलाने वाले अपने शातिर तरीके से ट्रैवल वेबसाइट के प्रतिनिधियों को भी दूसरे रिसोर्ट बताकर लिस्टेड करवा लेते हैं। इन वेबसाइट पर कई फर्जी रिसॉर्ट्स लिस्टेड है। जबकि यह रिसॉर्ट्स धरातल पर हैं ही नहीं। इन वेबसाइट पर ट्रैवलर्स के ऐसे कई कमेंट भी मिल जाएंगे, जिससे उन्होंने साफ तौर पर लिखा है कि बुकिंग दूसरे रिसोर्ट के नाम से थी और उन्हें ठहराया कहीं और गया। इसका मतलब साफ है कि लपकों ने फर्जी रिसोर्ट लिस्टेड करवा दिए और बुकिंग आने पर आगे किसी रिसोर्ट को बेच दी।

राशिफल

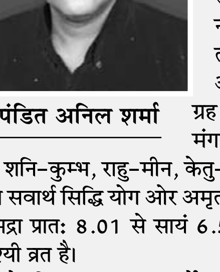

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 18 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि सोमवार, विक्रम सम्वत 2081, मृगशिरा नक्षत्र दिन 3.49 तक, सिद्ध योग सायं 5.22 तक, वाणिज करण प्रात: 8.01 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति – सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरु–वृष, शुक्र–धनु, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में संचार करेगा।

आज सवार्थ सिद्धि योग ओर अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 3.44 तक है। भद्रा प्रात: 8.01 से सायं 6.56 तक है। आज सौभाग्य सुन्दर्श व्रत, चतुश्यी व्रत है।

श्रेष्ठ चोघडिया – अमृत – सूर्योदय से 8.13 तक, शुभ 9.32 से 10.52 तक, चट – 1.32 से 2.51 तक, लाभ–अमृत 2.51 से सूर्यास्त तक

राहुकाल – 7.30 से 9.00 तक, सूर्योदय 6.53 सूर्यास्त 5.31

मेष
मेष – व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
वृष – आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मिथुन
मिथुन – मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बडेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
कर्क – व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। अनावश्यक समय खराब होगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। स्वभाव की तेजी पर ध्यान दे।

सिंह
सिंह – आर्थिक–वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। घर परिवार में अथितियों का आगमन रहेगा।

कन्या
कन्या – व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

तुला
तुला – नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
वृश्चिक – चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
धनु – व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। नौकरी पैशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
मकर – स्वास्थ्य संबंधित चिंता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
कुम्भ – व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। नौकरी पैशा व्यक्तियों को भाग–दौड से राहत मिलेगी।

मीन
मीन – परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।